OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 4 [Jul-Aug] Year 2026*

Research Article

भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का गुप्त एवं अदृश्य योगदान : पश्चिमी उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन

त्रिलोकी नाथ सिंह यादव
शोधार्थी, इतिहास, गांधी स्मारक पी.जी. कॉलेज समोधपुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
वी.बी.एस.पी. विश्वविद्यालय जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * त्रिलोकी नाथ सिंह यादव

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22126431

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल उदारवादी, उग्रवादी विचारधाराओं अथवा उन क्रांतिकारियों तक सीमित नहीं था, जिन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से हथियार उठाए थे, अपितु यह उन अनगिनत व असंख्य महिलाओं के त्याग, साहस और संगठनात्मक क्षमता का भी इतिहास है, जिन्होंने पर्दे के पीछे रहकर अपने सक्रिय योगदान द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन को गति प्रदान किया।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन बहुआयामी संघर्ष था, जिसमें अहिंसात्मक और क्रांतिकारी दोनों पक्षों ने समान रूप से योगदान दिया। जहाँ एक ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसावादी जनआंदोलन संचालित हुए, वहीं दूसरी ओर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन , अनुशीलन समिति तथा अन्य क्रांतिकारी संगठनों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया। इन आंदालनों में स्त्रियों ने भी सक्रिय , महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी भूमिकाएं निभाई। भारत की स्वंत्रता में महिलाओं की भूमिका प्रेरणादायी थीं। क्रन्तिकारी आदांलनो में महिलाओ ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, साथ ही सक्रिय व् सहयोगी रूप से योगदान भी दिया। इतिहास लेखन में इन महिलाओं की भूमिका को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया गया है ,क्योंकि उनकी अधिकांश गतिविधियाँ गोपनीय थीं और उनका रिकॉर्ड सीमित ही रहा।

यह शोध, विषय की गंभीरता को समझते हुए इसका विस्तृत अध्ययन करने का प्रयास करता है कि यदि महिलाओं का यह गुप्त, अदृश्य, सक्रिय सहयोग न होता, तो क्रांतिकारी संगठनों के संचालन, संचार प्रणाली और संगठनात्मक निरंतरता को बनाए रखना अत्यंत कठिन व दूभर कार्य होता। यह प्रस्तुत शोध अध्ययन स्थानीय इतिहास, मौखिक परंपराओं और उपलब्ध ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर महिलाओं की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करता है। इस शोध पत्र द्वारा क्रन्तिकारी आंदोलनों में महिलाओ की भूमिका, विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय भू-भाग, किस प्रकार से राजनीतिक चेतना एवं क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहे, उसके अध्ययन पर केंद्रित है। महिलाओं ने अदृश्य एवं गुप्त रूप से क्रांतिकारियों की सहायता की साथ ही क्रन्तिकारी कार्य भी किये , किन्तु इतिहास लेखन में उनके योगदान एवं भूमिका को उचित व अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया। इतिहास केवल एक पक्षीय ही लिखा गया। अतः यह शोध अध्ययन महिलाओं की भूमिका, उनके सहयोग ,साहस ,राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्रवादिता जैसे प्रत्येक पक्ष पर चर्चा करता हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 15-07-2026
- **Accepted:** 23-08-2026
- **Published:** 27-08-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 938-942
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

यादव त्रि. न. सिं. भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं का गुप्त एवं अदृश्य योगदान: पश्चिमी उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):938-942.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, क्रांतिकारी आंदोलन, महिला योगदान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुप्त गतिविधियाँ, महिला क्रांतिकारी, गुप्त संगठन, सामाजिक इतिहास, राष्ट्रवाद, अदृश्य योगदान

© 2026 त्रिलोकी नाथ सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इतिहसकारों , विद्वानो ने महिलाओं की भूमिका पर बहुत कम और सीमित ही चर्चा की , महिलाओं की भूमिका पर चर्चा सिर्फ़ सत्याग्रह, विदेशी कपड़ों के बहिष्कार और जन-आंदोलनों के संदर्भ में ही किया गया।इसके विपरीत, क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय व् बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई। महिलाओ ने गुप्त और अदृश्य रूप से सक्रिय भूमिकाओं को निभाया।

आज़ादी की लड़ाई में स्त्रीओ ने सामाजिक, पारिवारिक व रूढ़िवादी विचारो से ऊपर उठकर सक्रिय एवं महत्वशील योगदान दिया। इस योगदान में उत्तर प्रदेश की भूमि भी अछूती नहीं रही ,विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में- मेरठ, सहारनपुर, मुज़फ़्फ़रनगर, बागपत, बुलंदशहर, अलीगढ़ और आगरा जैसे क्षेत्रों में- कई महिलाओं ने क्रांतिकारियों के लिए संदेशवाहक, हथियार पहुँचाने वाली, आश्रय देने वाली, आर्थिक मदद करने वाली और सहयोगी के तौर पर महत्वपूर्ण योगदान दिया। सामाजिक बंधनों, औपनिवेशिक दमन और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के कारण, उनके योगदान को पर्याप्त रूप से इतिहास के पन्नों पर न लिखा गया नाही सही ढंग से उन पर चर्चा ही की गयी।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पश्चिमी उत्तर प्रदेश भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा है, जहाँ राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक जागरण तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना का सूत्रपात हुआ। मेरठ, सहारनपुर, मुज़फ्फरनगर, बागपत, बुलंदशहर, गाज़ियाबाद तथा अलीगढ़ जैसे जनपद राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र थे।

विपिन चंद्रा अपनी पुस्तक में कहते हैं कि दिल्ली पर कब्ज़ा होने के उपरान्त एक महीने के भीतर ही विद्रोह देश के अलग-अलग हिस्सों- कानपुर, लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, बरेली, जगदीशपुर और झाँसी— में फैल गया। विद्रोहियों की गतिविधियों से अंग्रेज़ों के प्रति गहरी नफ़रत ज़ाहिर हुई और हर जगह प्रशासन को उखाड़ फेंका गया।[1]

1857 की क्रांति की सूत्रपात मेरठ छावनी के स्वतंत्रता प्रेमी सैनिक मंगल पांडे ने की थी। 29 मार्च 1857 को उन्होंने नए कारतूसों के प्रयोग के विरुद्ध आवाज़ उठाई। गौरतलब है कि ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीय सेना को दिए गए नए कारतूसों में सुअर और गाय की चर्बी का इस्तेमाल किया गया था। छावनी में उन्हें पकड़ने के लिए आगे बढ़े ब्रिटिश अधिकारियों को उन्होंने मार डाला। 8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फाँसी दे दी गई। उनकी फाँसी की खबर से पूरे देश में क्रांतिकारी माहौल बन गया।[2]

क्रांतिकारी आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका

भारत के इतिहास में महिला भागीदारी को बहुत महत्व नहीं दिया गया। भारतीय इतिहास के पन्नों में उन महिलाओं का योगदान कहीं खो गया है जिन्होंने इस संघर्ष में बराबरी की हिस्सेदारी निभाई । महिलाओं की भागीदारी का सबसे अहम पहलू उनका छिपा हुआ और अदृश्य योगदान था। क्रांतिकारी संगठनों की सफलता सिर्फ़ सशस्त्र संघर्ष पर ही नहीं, अपितु एक मज़बूत गुप्त नेटवर्क पर भी टिकी थी। इस नेटवर्क में महिलाओं ने संदेशवाहक, पनाह देने वाली, आर्थिक मदद करने वाली, खुफिया जानकारी जुटाने वाली, साहित्य और हथियार पहुँचाने वाली और संगठन में मदद करने वाली के तौर पर अहम भूमिकाएँ निभाईं। क्रांतिकारी आंदोलन के वैचारिक संदर्भ में, महिलाओं की भूमिका सिर्फ़ मशहूर नायिकाओं तक ही सीमित नहीं थी।

कुछ महत्वपूर्ण महिला क्रांतिकारियों को इतिहासकारों ने अंकित कर उनके योगदान को अहमियत दी जिनमें रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, उदा देवी , अजीज़न बाई ,ईश्वरी देवी जैसी महिलाओं ने सीधे तौर पर संघर्ष का नेतृत्व किया, तो कुछ गुमनाम महिलाओं ने बिना किसी सार्वजनिक पहचान की इच्छा के आंदोलन को सक्रियता ,कर्मठता के बल पर ज़िंदा रखा। उनके त्याग, साहस और संगठनात्मक कौशल ने यह साबित कर दिया कि राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता केवल नेतृत्व पर ही नहीं, अपितु सामाजिक समर्थन पर भी निर्भर थी।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में महिलाओं का गुप्त एवं अदृश्य योगदान

1857 की घटनाएँ सिर्फ़ ब्रिटिश शासन के ख़िलाफ़ भारतीय सिपाहियों के विद्रोह की कहानी नहीं हैं। यह विद्रोह भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल के तौर पर इतिहास में दर्ज है। हालाँकि, इतिहास के पन्नों में उन महिलाओं का योगदान कहीं खो गया है जिन्होंने इस संघर्ष में बराबरी से हिस्सा लिया था। चाहे वह असगरी बेगम हों, जिन्हें 1858 में अंग्रेज़ों ने पकड़कर ज़िंदा जला दिया था, या भगवती देवी त्यागी, जिन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी के ख़िलाफ़ हथियार उठाने के लिए फाँसी दी गई थी; महिलाओं ने न सिर्फ़ संघर्ष में हिस्सा लिया, बल्कि कई बार लड़ाई की कमान भी संभाली।

सैकड़ों महिलाओं ने अंग्रेज़ों का मुक़ाबला किया और कई तो कमांडिंग भूमिकाओं में भी थीं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और बेगम हज़रत महल हैं, जिन्होंने लखनऊ की घेराबंदी का नेतृत्व किया था। हालाँकि, अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ लड़ने वाली कई महिलाएँ शाही परिवारों से नहीं थीं। "कई महिलाएँ साधारण घरों से आई थीं। वे शासक नहीं थीं, लेकिन वे बहादुरी से युद्ध के मैदान में उतरीं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश लड़ाई का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा, जहाँ मेरठ में विद्रोह शुरू हुआ, बागपत में शालमल ने मोर्चा संभाला और मुज़फ़्फ़रनगर में महिलाओं ने अंग्रेज़ों का मुक़ाबला किया,"।

इतिहासकार शम्सुल इस्लाम ने अपने लेख 'इंडियन फ़र्स्ट वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस 1857: हिंदू-मुस्लिम-सिख यूनिटी, मास एंड विमेन पार्टिसिपेशन' में लिखा है, "असगरी बेग़म का जन्म 1811 में हुआ था और उन्होंने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ गतिविधियों में

[1] बिपिन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, सुचेता महाजन एवं के. एन. पनिक्कर, India's Struggle for Independence, Revised and Updated Edition (नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2022), पृ. 32।

[2] राजीव अहीर, आधुनिक भारत का इतिहास (नई दिल्ली: स्पेक्ट्रम बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, 2018), पृ. 172।

© 2026 त्रिलोकी नाथ सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अहम भूमिका निभाई थी। 1858 में एक लड़ाई के दौरान अंग्रेज़ों ने उन्हें पकड़ लिया और ज़िंदा जला दिया।"[3]
महिलाओं ने स्वयं को घर की चार दीवारों में सीमित न कर घर की चौखट को लाँघ कर क्रांति में सक्रिय योगदान दिया। महिलाओ ने प्रमुखता से क्रांति में महत्वपूर्ण कार्य किये जो निम्न हैं-

1. क्रांतिकारियों को आश्रय प्रदान करना
क्रांतिकारी आंदोलन के दौरान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश की महिलाओं ने क्रांतिकारियों को सुरक्षित आश्रयस्थल उपलब्ध कराने में प्रमुख भूमिका निभाई। क्रांतिकारियों को छिपने के लिए कई महिलाओं ने अपने घरों को गुप्त आश्रय स्थल के तौर पर खोल दिया। उन्होंने क्रांतिकारियों की पहचान छिपाए रखते हुए उनके खाने, आराम और ज़रूरी इलाज की व्यवस्था की ।

2. गुप्त संदेशों का आदान-प्रदान
क्रांतिकारी संगठनों की सफलता के लिए एक सुरक्षित और गोपनीय संचार व्यवस्था बहुत अनिवार्य थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की महिलाओं ने संदेशवाहक की भूमिका को बढ़े ही सक्रियता व साहस के साथ निभाया । वे धार्मिक यात्राओं, मेलों, पारिवारिक समारोहों और घरेलू कार्यो के बहाने में एक जगह से दूसरी जगह गुप्त संदेश पहुँचाती थीं। अक्सर, संदेशों को कोड भाषा, धार्मिक ग्रंथों, कपड़ों या घर की चीज़ों में छिपाकर भेजा जाता था।

3. शस्त्र एवं क्रांतिकारी साहित्य का परिवहन
क्रांतिकारी आंदोलन की क्रमिकता को बनाये रखने के लिए हथियार, गोला-बारूद और प्रचार के लिए प्रतिबंधित पुस्तकों ,पत्रों ,साहित्यो को एक स्थान से दूसरे स्थान सुरक्षित पहुँचाना आवश्यक था। इस कार्य में महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई। वे पिस्तौल, कारतूस और क्रांतिकारी साहित्य,प्रचार सामग्रियों आदि को अपने कपड़ों, अनाज की बोरियों, पूजा-पाठ की सामग्री , घरेलू सामान या रोज़मर्रा की अन्य चीज़ों में छिपाकर के एक स्थान से दूसरे स्थान सुरक्षित पहुँचाती थीं।
इन कार्यो के अतिरिक्त महिलाओ ने प्रचार प्रसार ,संदेशवाहक ,गुप्तचर , क्रांतिकारियों के सुरक्षित ढालो के रूप में भी अपनी भूमिकाओं को निभाया।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की प्रमुख महिला क्रांतिकारियों एवं उनका योगदान

रानी लक्ष्मीबाई
विपिन चंद्र ने अपनी पुस्तक में जनरल ह्यू रोज़ के एक वक्तव्य को उद्धृत किया है , झांसी की रानी 17 जून 1858 को लड़ते हुए शहीद हो गईं। उन्हें हराने वाले जनरल ह्यूरोज़ ने अपनी दुश्मन की तारीफ़ करते हुए कहा था कि " यहाँ वह महिला लेटी हुई है जो बागियों में अकेली मर्द थी।[4]

सुभद्रा कुमारी ने अपनी कविता झाँसी की रानी में लिखा है ...

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।[5]

उदा देवी

उदा देवी का जन्म उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले में पासी जाति में हुआ था। इनके पति का नाम मक्का पासी था ,शादी के उपरान्त ससुराल में ऊदा का नाम 'जगरानी' रख दिया गया। उदा देवी अवध के छठे बादशाह नवाब वाजिद अली शाह के महिला सैनिक दस्ते की सदस्य थी।
एक कहानी है कि अंग्रेज़ों ने एक बेहतरीन निशानेबाज़ की गोली चलने की आवाज़ सुनी, जो पेड़ के ऊपर से गोली चला रहा था। जब वे पेड़ को गिराने में कामयाब हुए, तब उन्हें पता चला कि गोली चलाने वाली एक महिला थी, जिसकी पहचान पासी समुदाय की उदा देवी के तौर पर हुई।
फोर्ब्स-मिचेल ने अपनी किताब 'रेमिनिसेंस ऑफ़ द ग्रेट म्यूटिनी' (Reminiscences of the Great Mutiny) में उदा देवी के बारे में लिखा है: "उनके पास पुराने ज़माने की भारी कैवेलरी पिस्तौलें थीं; एक पिस्तौल उनकी बेल्ट में लगी थी और उसमें गोली भरी हुई थी, और उनके पाउच में भी काफ़ी गोला-बारूद बचा हुआ था। पेड़ पर उन्होंने जो जगह बनाई थी—जिसे हमले से पहले ही बहुत सावधानी से तैयार किया गया था—वहाँ से उन्होंने आधे दर्जन से ज़्यादा लोगों को मार गिराया था।"[6]

शीला देवी
उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले की शीला देवी भी एक महान वीरांगना थी। लोक कवि गंगा सिंह अपने लोक गीत में 1857 के संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ बहादुरी से भाग लेने वाली शीला देवी के साथ सैकड़ो अन्य महिलाओं के पराक्रम का गर्व के साथ उल्लेख किया है..

---

[3] उदय राणा, "1857 का विद्रोह: जब लैंगिक बाधाएँ टूटीं और महिलाओं ने पुरुषों के समान संघर्ष किया" (The Revolt of 1857: When Gender Barriers Crumbled, Women Fought as Equals), द टाइम्स ऑफ़ इंडिया (मेरठ संस्करण), 9 मई 2016।

[4] बिपिन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, सुचेता महाजन एवं के. एन. पनिक्कर, India's Struggle for Independence, Revised and Updated Edition (नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2022), पृ. 39

[5] सुभद्रा कुमारी चौहान, "झाँसी की रानी," काव्यालय (Kaavyaalaya): हाउस ऑफ़ हिंदी पोएट्री, अभिगमन तिथि: 2 अगस्त 2026, https://kaavyaalaya.org/jhansi

[6] राना सफ़वी, "1857 की भूली-बिसरी वीरांगनाएँ" (The Forgotten Women of 1857), द वायर, 19/Nov/2018, The Wire

© 2026 त्रिलोकी नाथ सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बाँदा लूटो रात के गुइयाँ, सोउत राई चिरैया।
शीला देवी लडी दौर के संग में सहस मिहरियां ।।
अँग्रेजन सों करी लराई मारे लोग लूगईयां।
गिरी गुसाई तब दौरे हैं लरन लगे मऊ मइया ।।
शीला देवी को सिर काटो पलो लगत नई गुइयाँ।
भगी सहेली सब गाउन में लैके पाल मूनईया।।
गंगा सिंग टेर के कैरए भगों इतै न रईया। [7]

अज़ीज़न बाई

औपनिवेशिक और भारतीय इतिहासकारों ने कानपुर की लड़ाइयों के दौरान अज़ीज़न बाई की भूमिका का ज़िक्र किया है।अजीज़न बाई नाना साहब से प्रेरित थीं।विद्रोह में उनकी भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता, क्योंकि वह एक मुखबिर थीं ,जिन्होंने विद्रोहियों को बहुत महत्वपूर्ण जानकारी दी थी, जिसके बिना विद्रोही ताकतों के लिए अभियान चलाना और उसे निर्णायक मोड़ तक पहुंचाना संभव नहीं होता।

आज भी कानपुर के लोगों के बीच उनकी यादें ज़िंदा हैं। वह लक्ष्मीबाई की तरह पुरुषों के कपड़े पहनती थीं और हाथ में पिस्तौल लेकर सैनिकों के साथ घोड़े पर सवार होकर चलती थीं।

लता सिंह अपने लेख "मेकिंग द 'मार्जिन' विज़िबल" (हाशिए को दृश्यमान बनाना) में लिखती हैं कि अज़ीज़ुन कानपुर में तैनात दूसरी कैवेलरी के सिपाहियों के बीच बहुत लोकप्रिय थीं और शम्सुद्दीन नाम के एक सिपाही के तो बहुत करीब थीं। उनका घर सिपाहियों के मिलने-जुलने की जगह बन गया था। उन्होंने महिलाओं का एक समूह भी बनाया था, जो निडर होकर हथियारबंद पुरुषों का हौसला बढ़ाती थीं, उनके घावों का इलाज करती थीं और हथियार व गोला-बारूद बांटती थीं। इस काम के लिए उन्होंने तोपखाने की एक बैटरी को अपना मुख्यालय बना लिया था। कानपुर की घेराबंदी के पूरे समय के दौरान, वह उन सैनिकों के साथ रहीं जिन्हें वह अपना दोस्त मानती थीं, और वह खुद भी हमेशा पिस्तौल से लैस रहती थीं।[8]

रानी तपस्विनी: सुनंदा बाई

झांसी की रानी की तरह, वह भी घुड़सवारी और युद्ध-कला का अभ्यास करती थीं। पिता की मृत्यु के बाद, उन्हें जो राज्य मिला था, उसे उन्होंने बखूबी संभाला । उन्होंने अपने पिता के किले की मरम्मत करवाई और राज्य की सुरक्षा के लिए सैनिकों की भर्ती करके उन्हें प्रशिक्षित भी किया।

अपने प्रवचनों के माध्यम से जनता को क्रान्ति के लिए प्रेरित करती रहती थी। 1857 की क्रान्ति में उसने सक्रीय रूप से भाग लिया। क्रान्ति के दमन के बाद वह नाना साहब के साथ नेपाल चली गई और कुछ समय बाद वह कलकता आ गई। 1907 ई० में कलकता में ही उनका देहांत हो गया।[9]

रानी तपस्विनी ने कोलकाता में 'महाभक्ति पाठशाला' नाम का एक स्कूल शुरू किया। लोकमान्य तिलक और 'केसरी' के सब-एडिटर खाडिलकर ने वहाँ रानी तपस्विनी से मुलाक़ात की। मिस्टर खाडिलकर नेपाल में हथियारों की एक गुप्त फ़ैक्ट्री शुरू करना चाहते थे। रानी नेपाल के कमांडर शमशेर जंग को जानती थीं। रानी की जान-पहचान के ज़रिए टाइल बनाने की एक फ़ैक्ट्री शुरू की गई, जो असल में हथियारों की फ़ैक्ट्री के लिए एक आड़ थी। इन हथियारों को बंगाल भेजा जाता था। दुर्भाग्य से, एक गद्दार ने इस काम को धोखा दिया और खाडिलकर पकड़े गए। वे किसी तरह महाराष्ट्र भागने में कामयाब रहे। इस दौरान, बढ़ती उम्र की रानी को यह देखकर दुख हुआ कि कुछ लोग आज़ादी की लड़ाई के ख़िलाफ़ थे। फिर भी, उन्होंने बंगाल के बँटवारे के ख़िलाफ़ आंदोलन में हिस्सा लिया।[10]

महिलाओं के योगदान का ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन

भारतीय इतिहास लेखन मुख्यतः एक पक्षीय लिखा गया है। जिसमें अधिकांशतः पुरुष प्रधानता को महत्व मिला है , जबकि महिलाओं की भूमिका को सदैव समर्थन देने या घरेलू हिस्सेदारी तक ही सीमित माना गया। जबकि , महिलाओं ने न केवल सीधे संघर्ष में भाग लिया, अपितु कई महत्वपूर्ण गुप्त जिम्मेदारियां भी निभाईं—जैसे क्रांतिकारियों को शरण देना, आर्थिक सहायता करना , हथियार पहुंचाना और संदेशों के आदान-प्रदान में मदद करना। यह भूमिका पश्चिमी उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से उल्लेखनीय थी, जहां कई महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्थानीय विद्रोहों और क्रांतिकारी गतिविधियों का सक्रिय रूप से समर्थन किया। साथ ही सक्रिय भूमिकाएं भी निभाई।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, महिला क्रांतिकारियों ने अपने अटल इच्छाशक्ति ,बुद्दिमत्ता ,विश्वास के बल पर क्रांति को एक नयी दिशा दी। असगरी बेगम (शामली/मुजफ्फरनगर) स्थानीय विद्रोहियों के साथ खड़ी हुईं और अंग्रेजों द्वारा उन्हें जिंदा जला दिया गया। हबीबा खातून (मुजफ्फरनगर) को भी क्रांतिकारियों का समर्थन करने के कारण अंग्रेजों के दमन का सामना करना पड़ा। इसी तरह, उदा देवी पासी—जिन्होंने लखनऊ के सिकंदर बाग में ब्रिटिश सैनिकों का बहादुरी से सामना किया—दलित महिलाओं की वीरता का एक अनूठा उदाहरण हैं। बेगम हजरत महल ने अवध में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया और आजादी की रक्षा के लिए लड़ाई लड़ी।महिला क्रांतिकारीयो ने राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को बखूभी निभाया। चाहे वह झाँसी की रानी या झलकारी बाई या फिर सुनंदा ,शीला देवी आदि

[7] हृदयेश कुमार, "1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश की दलित महिलाओं का योगदान," राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यवृत्त (शिकोहाबाद: जे.एस. विश्वविद्यालय, 2023), पृ. 478।

[8] राना सफ़वी, "1857 की भूली-बिसरी वीरांगनाएँ" (The Forgotten Women of 1857), द वायर, 19/Nov/2018, The Wire

[9] डॉ. विमला मरावी, "1857 की क्रान्ति में महिलाओं का योगदान : एक ऐतिहासिक विश्लेषण," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एंड एप्लाइड रिसर्च (International Journal of Advance and Applied Research), खंड 11, अंक 6 (जुलाई–अगस्त 2024), पृ. 254।

[10] https://www.hindujagruti.org/history/69714.html

© 2026 त्रिलोकी नाथ सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सभी ने क्रांति में अपने प्राणो की आहुति देकर क्रांति की ज्वाला को प्रजज्वलित रखा।

निष्कर्ष

इतिहासकारों का मानना है कि औपनिवेशिक अभिलेखों तथा भारतीय इतिहासकारों द्वारा महिलाओं के गुप्त व अदृश्य योगदान का सीमित उल्लेख मिलने के कारण उनका ऐतिहासिक महत्व पूर्णरूप से प्रकट नहीं हो पाया ।यदि आज के समय की बात करे तो कुछ आधुनिक नारीवादी इतिहास लेखन तथा स्थानीय इतिहास के अध्ययनों ने इन उपेक्षित महिला क्रांतिकारियों के योगदान को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। साथ ही केंद्र व राज्य की सरकरों ने भी उनके स्मरण में स्मृति चिन्हो को प्रकाशित कर विसरित इतिहास को पुनः सरंक्षित करने का एक अथक प्रयास किया है।

"उत्तर प्रदेश की सरकार ने यह घोषणा, कि राज्य में "प्रान्तीय सशस्त्र कांस्टेबल" के बल की तीन नई बटालियन का नाम क्रमशः रानी अवंतीबाई, उदा देवी और झलकारी बाई के नाम पर बदायूं, लखनऊ और गोरखपुर में रखा जाएगा।[11]"

सीमित ऐतिहासिक साक्ष्यों और अप्राप्त लिखित इतिहास के कारण वर्षों तक महिलाओं के योगदान को पूर्णतः नज़र अंदाज़ किया गया, साथ ही उनके अथक प्रयासों को भी वह स्थान नहीं मिल पाया, जो बाकि स्वन्त्रन्ता सेनानियों को मिला। अतः इसलिए आवश्यक है कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की स्थानीय महिला क्रांतिकारियों के योगदान का अभिलेखीय स्रोतों, लोकस्मृतियों तथा मौखिक इतिहास के आधार पर पुनर्मूल्यांकन किया जाए, जिससे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास अधिक समावेशी, संतुलित और तथ्यपरक स्वरूप में प्रस्तुत हो सके।इस शोध पत्र के माध्यम से उन वीररंगनाओ के योगदान का पुनः मूल्यांकन का एक छोटा प्रयास किया गया है।

संदर्भ सूची

1. चंद्र ब, मुखर्जी म, मुखर्जी आ, महाजन सु, पनिक्कर केएन। भारत का स्वतंत्रता संग्राम। संशोधित एवं अद्यतन संस्करण। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया; 2022।
2. अहीर र। आधुनिक भारत का इतिहास। नई दिल्ली: स्पेक्ट्रम बुक्स प्राइवेट लिमिटेड; 2018।
3. कुमार ह। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश की दलित महिलाओं का योगदान। राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यवृत्त। शिकोहाबाद: जे.एस. विश्वविद्यालय; 2023।
4. मरावी वि। 1857 की क्रान्ति में महिलाओं का योगदान: एक ऐतिहासिक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एंड एप्लाइड रिसर्च। 2024 जुलाई-अगस्त;11(6)।
5. राणा उ। 1857 का विद्रोह: जब लैंगिक बाधाएँ टूटीं और महिलाओं ने पुरुषों के समान संघर्ष किया [The Revolt of 1857: When Gender Barriers Crumbled, Women Fought as Equals]। द टाइम्स ऑफ इंडिया। मेरठ संस्करण। 2016 मई 9।
6. सफ़वी र। 1857 की भूली-बिसरी वीरांगनाएँ [The Forgotten Women of 1857]। द वायर। 2018 नवम्बर 19।
7. हिन्दू जनजागृति समिति। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगनाओं का योगदान।
8. टीएनएन। उत्तर प्रदेश में तीन पीएसी बटालियनों का नाम तीन महिला स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पर रखा जाएगा [UP: PAC Battalions to Be Named After 3 Women Freedom Fighters]। द टाइम्स ऑफ इंडिया। 2021 मार्च 21।

[11] टीएनएन (TNN), "उत्तर प्रदेश में तीन पीएसी बटालियनों का नाम तीन महिला स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पर रखा जाएगा" (UP: PAC Battalions to Be Named After 3 Women Freedom Fighters), द टाइम्स ऑफ इंडिया, 21 मार्च 2021,

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

त्रिलोकी नाथ सिंह यादव इतिहास विषय के शोधार्थी हैं। वे गांधी स्मारक पी.जी. कॉलेज, समोधपुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश से संबद्ध हैं तथा वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत के अंतर्गत शोधकार्य कर रहे हैं। इतिहास के क्षेत्र में उनकी गहरी रुचि और निष्ठा उनके शोध कार्य में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

© 2026 त्रिलोकी नाथ सिंह यादव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/